प्रातःक्लास 3.3.68 ओशांति मधुबन पिताश्री

ओमशांति। रुहानी बच्चों प्रति, जो भी वाणी से परे जाने लिए गोया घर जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। वह सभी आत्माओं का घर है। तुम समझते हो अभी हमको यह शरीर छोड़कर घर जाना है। बाप कहते हैं मैं तुमको आया हूँ घर ले जाने लिए। इसलिए इस देह और देह के सम्बंधों से इस पुरानी दुनियाँ से उपराम होना है। यह तो छी2 दुनियां है। यह भी आत्मा जानते हैं हमको अभी जाना है। बाप आया है पावन बनाने,फिर से हमको पावन दुनियाँ में जाना है। यह अंदर में विचार–सागर–मंथन होना चाहिए। और कोई को ऐसे विचार नहीं आवेंगे। तुम समझते हो हम खुद अपने दिल से यह शरीर छोड़ अपने घर जाकर नये पवित्र सम्बंध में नई दुनियाँ में आवेंगे। यह स्मृति भी बहुत थोड़ों को होती है। बाप कहते हैं छोटे, बड़े, बूढ़े आदि सबको वापस जाना है। फिर नई दुनिया , नये पावन सम्बंध में आवेंगे। घड़ी2 बुद्धि में आना चाहिए। हम अभी आने लिए तैयारी करते हैं। जो करेंगे वहीं साथ चलेंगे। ईश्वर अर्थ करते हैं तो फिर वही पदमापदम बन जाती है नई दुनियां में। वह लोग इस पुरानी दुनियां में इनडायरैक्ट ईश्वर अर्थ करते हैं। समझते हैं ईश्वर इसका फल देंगे। अभी बाप समझाते हैं वह तुमको अल्पकाल क्षणभंगुर मिलता था। अभी तो मैं खुद आया हूँ। तुमको राय देता हूं। अभी जो देंगे वही 21जन्मों लिए पदम होकर मिलेगा। तुम समझते हो हम बड़े घर में जाकर जन्म लेंगे। हम तो ना0 अथवा ल0 बनेंगे। तो इतनी मेहनत करनी चाहिए। हम इस छी2 दुनियां से जाने लिए तैयारी कर रहे हैं। यह पुराना शरीर ,पुरानी दुनियां छोड़नी है। ऐसा तैयार रहना चाहिए जो पिछाड़ी समय कोई भी याद न आये। अगर पुरानी दुनिया या मित्र–सम्बंधी आदि याद आई तो कहते हैं ना अंत काल जो स्त्री सुमिरे.....बाप को फालो करना चाहिए। ऐसे नहीं बाबा बूढ़ा है तब ही समझते हैं। यह शरीर तो छोड़ना ही है। नहीं। तुम सब बूढ़े हो। सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। सबको वापस जाना है। तब ही बाप कहते हैं इस पुरानी दुनियां से बुद्धियोग तोड़ दो। अभी तो जाना है। फिर जितना वहां ठहरना होगा उतना ठहरेंगे। जितना पी(छे) पार्ट होगा तो पीछे शरीर धारण कर पार्ट बजावेंगे। कोई तो 10वर्ष कम 5000वर्ष शांतिधाम में रहेंगे। पिछाड़ी को आवेंगे और जावेंगे। जैसे काशी कलवट खाते हैं। सब पाप झट खलास हो जाते हैं। पिछाड़ी में आने वालों के क्या पाप होंगे? आये और गये। बाकी मोक्ष कोई को मिल न सके। वहां रहकर क्या करेंगे? पार्ट तो जरूर बजाना ही है। तुम्हारा पार्ट है शुरू में आने का। तो बाप कहते हैं रहते हुए इस दुनियां में इस दुनियां को भूलते जाओ। अभी तो चलना है घरं 84का पार्ट पूरा हुआ। तुम पतित बन गए हो। फिर अभी तुम अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। दैवी गुण धारण करो। अपनी जांच करते रहो हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं है। दैवी स्वभाव चाहिए। इसके लिए चार्ट रखो। तो पक्के होते जावेंगे ;परंतु माया ऐसी है जो चार्ट रखने नहीं देती है। दो/चार दिन रख फिर छोड़ देते हैं ;क्योंकि तकदीर में नहीं है। तकदीर में होगा तो वह बहुत अच्छी रीत रजिस्टर रखेंगे। स्कूल में रजिस्टर जरूर रखते हैं। यहां भी सेंटर में सबको चार्ट ,रजिस्टर रखना है। फिर देखना है हम रोज जाते हैं, दैवी गुण धारण करते हैं। भाई–बहिन के सम्बंध से भी ऊँच जाना है। सिर्फ रुहानी दृष्टि भाई–बहिन की रहती है। हम आत्मा हैं,कोई क्रिमिनल दृष्टि नहीं। भाई–बहिन का सम्बंध इसलिए है ;क्योंकि तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियां हो। एक बाप के बच्चे हैं। इस संगम पर ही भाई–बहिन के सम्बंध में रहते हैं। तो विकार बंद हो जाये। एक बाप को ही याद करना है। वाणी से परे जाना है। ऐसे2 अपन से बातें करना ,यह है सूक्ष्म स्टडी। इसमें आवाज़ करने की भी दरकार नहीं। यह तो बच्चों को समझाने लिए आवाज़ में आना पड़ता है। वाणी से परे जाने लिए समझाया जाता है। अभी वापस जानाहै। बाप को बुलाया है ना कि आओ हमको अपने साथ ले चलो। पतित हैं वापस जा नहीं सकते हैं पावन दुनियां में। अब पावन कौन बनावे? साधु–संत आदि तो बना न सके। खुद ही पावन होने लिए गंगा स्नान करते हैं। बाप को जानते ही नहीं। जिन्होंने कल्प पहले जाना था वही अब भी पुरुषार्थ कर रहे हैं। कोई2 की तो बहुत गंदी

दृष्टि रहती है। बड़ा ही तंग करते हैं। विकार के लिए। कामी कुत्ते कहते हैं ना। कोई बच्चे भी घर में खराब काम करते हैं तो माइट मां–बाप कहते हैं तुम तो कामी कुत्ते हो। सतयुग में ऐसी बातें होती नहीं। रावण राज्य है नहीं। ईश्वर को भित्तर–ठिक्कर में कह देने से मनुष्यों का क्या हाल हो जाता है। सीढ़ी उतरे ही आये हैं। कहां जो सम्पूर्ण निर्विकारी ,कहां यह सम्पूर्ण विकारी। इन बातों को मानेंगे भी वहीं जिन्होंने कल्प पहले माना होगा। तुम्हारा फर्ज है जो आवे उनको बाप का फरमान बताना। सीढ़ी के चित्र पर समझाओ। सभी की अभी वानप्रस्थ अवस्था है। सब शांतिधाम ,सुखधाम जावेंगे। सुखधाम में वही जावेंगे जो योगबल से आत्मा को सम्पूर्ण बनावेंगे। भारत का प्राचीन योग भी गाया हुआ है। आत्मा अभी स्मृति आती है। बरोबर पहले2 हम आये हैं। अभी फिर वापस जाना है। तुमको अपना पार्ट याद आया है। जो इस कुल में आने वाले ही नहीं हैं उनको याद भी नहीं आता है कि हमको पवित्र बनना है। पवित्र बनने में ही मेहनत करनी पड़ती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो विकर्माजीत बनेंगे और भाई–बहिन समझो तो दृष्टि सुधर जाये। सतयुग में दृष्टि खराब नहीं होती है। रावण राज्य ही नहीं तो गंदे खयालात भी नहीं। इसको कहा जाता है तमोप्रधान गंदी दुनियां। बाबा को कितनी उतरवेला होती है। लिखते रहते हैं। यह लिखत जल्दी छपाओ। अपन से पूछे मैं निर्विकारी सतयुगी गॉ(डे)स हूं या विकारी कलियुगी डॉग एण्ड विच हूं। अपने दिल से पूछे। बाबा बहुत अच्छी2 युक्तियां बताते हैं ; परंतु किसकी बुद्धि में बैठता नहीं है। खयालात चलती है ..... ऐसी बातें याद कर इनमें लिखें जो मनुष्यों को पढ़ने से तीन लग जाये। हम और कुछ थोड़े ही कहते हैं। हम तो सिर्फ कहते हैं अपने आप से पूछो हम गॉड के संतान सतयुगी गॉड–गॉडेज हैं या तमोप्रधान डाग विच हैं। पतित–भ्रष्टाचारी हैं या पावन श्रेष्ठाचारी हैं। यह तो बहुत अच्छी चीज है। एरोप्लेन से भी यह गिराना चाहिए। शास्त्रों में भी नारद भक्त का मिसाल है ना। इनको कहो तुम अपने को देखो ल0 को वरने लायक हो? तो बोला हम तो कामी कुत्ता हैं। करतूत ऐसी हैं ना। तो अपने उपर आपे ही नफरत आवेगी। बरोबर हम तो विकारी हैं। अभी देवतायें तो निर्विकारी हैं। जो इस देवता धर्म के नहीं होंगे वह फाल्तू प्रश्न उठावेंगे। जो इस सैम्पलिंग के होंगे वह तो झट समझ जावेंगे। झट तुम्हारे पास समझने के लिए भाग आवेंगे। गॉड–गॉडेज बनने वाले न होंगे तो फिर फाल्तू बातें करते रहेंगे। बाप तो सब समझाते रहते हैं। पतित को ही कंस, जरासंधी ,दुःशासन आदि नाम कहा जाता है। कोई माइयां भी विकार बिगर रह नहीं सकती हैं। उनको फिर सूपनखा ,पूतना कहा जाता है। अपने से पूछेंगे हम सतयुगी देवता हैं या कलियुगी पूतनायें हैं। दिल से लगेगा। विकार मांगने वाले को पूतना कहा जाता है। तो बच्चों को अपनी उन्नति करनी है। अच्छे चित्र बनानी है। एक कहे सतयुगी हो या कलियुगी? दूसरे फिर कहे फलाना हूं या फलाना .....ऐसी2 धमचक्र मच जाये। बाप तो श्रीमत देते हैं। पतितों को पावन बनाने। बाकी धंधे आदि से हम क्या जाने? बाप के बुलाया ही है आकर मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बताओ। वह मैं बताता हूं। कितनी सहज बात है। इशारा ही बस है। मनमनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करौ। अर्थ न समझने कारण गंगा को पतित–पावनी समझ लिया है। पतित–पावन तो बाप है। पत्थरबुद्धि बड़ा मुश्किल समझते हैं। भवितमार्ग है ना। उनको घोर अंधियारा कहा जाता है। अभी है सबका कयामत का समय। हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस जावेंगे। बाप समझाते तो बहुत हैं कोई2 की तकदीर में न है तो गिर पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं भाई–बहिन समझो। खराब दृष्टि न जाये। किसको काम का भूत, लोभ का भूत आ जाता है। कोई को खाना ही याद पड़ता है। बाहर में देखेंगे चने वाला तो दिल होगा खाने। कच्चे हैं ना। फिर तो वह असर हो जाता है। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। मम्मा–बाबा और अनन्य बच्चे जिन्हों को बाप सर्टीफिकेट देते हैं उनको फालो करना चाहिए। यज्ञ का जो भी मिला वह मीठा कर खा लेते। जबान को ललचायमान नहीं करते हैं। योग भी चाहिए। योग न होगा तो और ही उनको कहेंगे फलानी चीज न खाओ।

तो बीमार पड़ जावेगा। बुद्धि में रहना चाहिए हम तो आये हैं देवता बनने लिए। अभी हमको वापस घर जाना है। फिर बच्चा बन मां के गोद में जावेंगे। मां का जो खान–पान होता है उसका असर बच्चे पर पड़ता है। वहां यह कुछ भी बातें नहीं होतीं। यह तो दुनियां ही छी2 है। अब हम जाते हैं घर। वहां तो सब कुछ फर्स्ट क्लास होगा। हमारे लिए मां भी खाना आदि फर्स्ट क्लास खावेंगी। जो हमारे पेट में जावेगा। कचरपटी कुछ न आवेगी। वहां तो फर्स्ट क्लास जन्म लेंगे। खान–पान आदि सब .....होता है। तो स्वर्ग में जाने की तैयारी करनी चाहिए। बाप को याद करना है। बाप रिजुबिनेट करते हैं। वह लोग तो बंदर की ग्लान्स निकाल मनुष्य में डालते हैं। तो वह बंदर मिसल हो जावेंगे। 5विकार रूपी बंदर बन जावेंगे। समझते हैं हम जवान हो जावेंगे। जैसे हार्ट नई डालते हैं। बाप ने कोई हार्ट थोड़े ही डाली है। बाप तो आकर चेंज करते हैं। बाकी तो यह सब है सायंस। बम्स आदि बनाते हैं। यह तो दुनियां को ही खलास करने की चीजें हैं तमोप्रधान बुद्धि है ना। वह तो खुश होते हैं। यह भी भावी बनी हुई है। बम्स जरूर बनने ही हैं। शास्त्रों (में) फिर लिखा है पेट से मूसल निकली। फिर यह हुआ.....कितने चर्याई की बातें हैं। शास्त्रों को अभी हाथ लगाने भी दिल नहीं होती। आगे पढ़ते थे। अभी बाप ने समझाया है यह भक्ति मार्ग के हैं। इससे तो दुर्गति होती है। राजयोग तो मैंने ही सिखाया था। वह तो सिर्फ पढ़कर सुनाते हैं। ऐसे2 भगवान आया ,राजयोग सिखाया था। वह तो अखानी हो गई। जो सुनते2 यह हाल हो गया है। अभी तुमको बाप सच्ची सत्य ना0 की कथा, तीजरी की कथा ,अमरकथा सुना रहे हैं इस पढ़ाई से तुम यह पद पाते हो। बाकी कृष्ण आदि तो है नहीं जो दिखाया है स्वदर्शनचक्र से सबको मारा। मैं तो सिर्फ राजयोग सिखा तुमको पावन बनाता हूं। हम तुमको स्वदर्शचक्रधारी बनाते हैं। तो उन्होंने फिर कृष्ण को चक्र आदि बैठ दिखाया है। स्वदर्शन चक्र फिरेगा कैसे? जादू की तो बात है नहीं। यह सब ग्लानी है ना। सो भी आधा चली है। कैसा वंडरफुल ड्रामा है। भक्ति माना ही दुर्गति। तो अभी सदगति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी हमको जाना है इसलिए ही बाप को याद करना है। दूसरा कुछ भी याद न आये। ऐसी अवस्था हो तब ही उंच पद पा सकते हैं। अपने ही दिल से पूछना चाहिए। रजिस्टर (कहां) है? रजिस्टर से चाल का मालूम पड़ेगा। रेग्युलर पढ़ते हैं वा नहीं। कई तो झूठ भी बोल देते हैं। बाप कहते हैं सच्च बताओ न बताओ तुम्हारा ही रजिस्टर खराब होता है। भगवान से पवित्र बनने की प्रतिज्ञा कर फिर तोड़ते हो तो क्या हाल होगा? विकार में गिरे तो खेल खलास। पहला नम्बर दुश्मन है देहाभिमान। फिर काम–क्रोध.....। देहाभिमान में आने से ही वृत्ति खराब होती है। इसलिए बाप कहते हैं देहीअभिमानी भव। अर्जुन भी यह है ना। कृष्ण की ही आत्मा थी। अर्जुन नाम है थोड़े ही। नाम तो चेंज होता है। जिसमें प्रवेश करते हैं। सन्यासी आदि तो झट कह देते हैं। यह झाड़ आदि सब कल्पना है। मनुष्य जो कल्पना करे वह देखने में आता है। यह लोग क्रोधी भी बहुत होते हैं। देखा ना कलकत्ते में शंकराचार्य ने कितना क्रोध किया। पुजारी में क्रोध है। पूज्य में क्रोध होता नहीं। इस समय सब पुजारी हैं। सबमें विकार है। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। अभी हम जाकर स्वर्ग में छोटे बच्चे बनेंगे। फिर नाम–रूप–देश–काल सब नया होगा। यह बेहद का ड्रामा है। बनी बनाई रही.....होना ही है। फिर हम चिंता क्यों करें? कहेंगे ऋषि–मुनि आदि भी कहते हैं कि हम नहीं जानते हैं। यह फिर कैसे कहते हैं कि हम .....हैं। पक्के2 जंगली जनावर हैं। शंकराचार्य भी पुजारी है ना। जहां पुजारी है वहां पूज्य एक भी नहीं होगा। उनको लिखना चाहिए तुम तो पुजारी हो। पूज्य होते ही हैं सतयुग में। कलियुग में है पुजारी। फिर तुम अपने को पूज्य कैसे कहलाते हो? पूज्य तो देवी देवताएं ही हैं। पुजारी हैं असुर। मूल बाप समझाते हैं पावन बनना है। मामेकम् याद करो। ड्रामा अनुसार जितना जिसने पुरुषार्थ किया होगा वह करेंगे। अच्छा ,मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग। मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। ओमशांति।